संग्रहालय

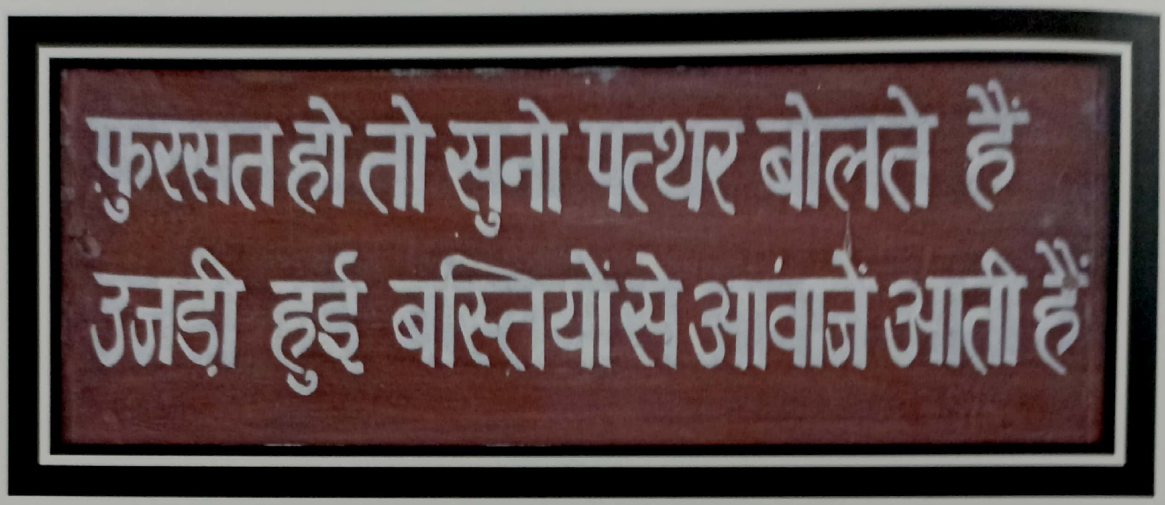

संग्रहालय विभाग के कक्ष के साथ जुड़ा तथा प्रथम मंजिल पर स्थित है। इसमें विभिन्न तरह की ऐतिहासिक चीजें, पुरावशेष व स्थानीय जन–जीवन को इंगित करती हुई चीजें रखी गयी है। इसकी भी विभिन्न गैलरी बनायी गई है। जिन्हें संस्था के साधनों व संसाधनों के अनुरूप सम्भाला गया है।

Scanned with Oken Scanner

1. पुरातात्त्विक गैलरी

ऐतिहासिक दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण तथा समृद्ध धरोहर से परिपूर्ण यह गैलरी, सभ्यताओं के विभिन्न आयामों को बखूबी दर्शाती है। इसमें विभिन्न स्थानों से उत्खनन से प्राप्त चीजें है जो सभ्यता के प्रारम्भिक चरण से लेकर वर्तमान काल तक हमारे पूर्वजों के जीवन जरूरत की चीजों तथा वैज्ञानिक तकनीकी कौशल को बताती है। इस गैलरी के निम्नलिखित वस्तुएं हैं

(क). मृद भाण्ड –

मिट्टी के विभिन्न तरह के बर्तन व उनके अवशेष मृद भाण्ड कहलाते हैं। विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों व टीलों से सर्वाधिक मात्रा में प्राप्त होने वाली चीजें इसी प्रारूप में मिलती है। वर्तमान हरियाणा विशेषकर हिसार क्षेत्र में हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल उभर रहे हैं। इन स्थलों में बनावली, कुणाल, भिरड़ाना, सिसवाल, राखीगढ़ी व खानक है। इन स्थलों में अब तक के उत्खनन से यह स्पष्ट हो गया है कि राखीगढ़ी का विस्तार क्षेत्र मोहनजोदड़ो से भी अधिक है तथा यह वर्तमान राजधानी स्तर का नगर रहा होगा। इन स्थलों के अतिरिक्त भी लौहारी राघो जैसे नए स्थलों ने भी पुरातत्ववेताओं का ध्यान आकर्षित किया है।

Scanned with Oken Scanner

इन विभिन्न स्थलों से डिस–आन–स्टैण्ड, कटोरे, थाली, मटका, जार, विभिन्न तरह के बच्चों के खिलौने, पांव को साफ करने का खुर्रा, मालाओं के मनके तथा अन्य रसोई में प्रयोग होने वाले बर्तन मिले हैं। इनमें से कुछ सम्पूर्ण तथा अधिकतर अवशेष के रूप मे हैं। इन बर्तनों की बनावट, आकार, अलंकरण तथा चित्रकारी को देखकर आभास होता है कि वास्तव में किसी विकसित सभ्यता से सम्बन्धित है।

भारतीय सन्दर्भ में हड़प्पा सभ्यता के बाद वैदिक सभ्यता रही यह सभ्यता वर्तमान सभ्यता का आधार है तथा जीवन शैली के अधिकतर पहलुओं की बुनियाद भी है। इस सभ्यता से सम्बन्धित बर्तनों को पी0जी0डब्ल्यू0 (चित्रित घूसर मृद–भाण्ड) तथा एन0बी0पी0डब्ल्यू0 (उतरी काले–घूसर मृद–भाण्ड) कहे जाते हैं। इसमें पी0जी0डब्ल्यू0 विश्व विख्यात मृदभाण्ड है जो केवल और केवल इसी क्षेत्र में बनते थे। यही नहीं ये इतने विशिष्ट थे कि इन्हें शाही परिवार के सदस्य प्रयोग में लाते थे। इन बर्तनों की मिट्टी तथा पकाने की विशेष तकनीक इन्हें अति विशिष्ट बनाती थी। इन बर्तनों पर पॉलिश नहीं होती थी बल्कि पकाई के दौरान ही यह रूप धारण करते थे। कभी–कभी इनका निर्माता इन पर काले रंग की चित्रकारी कर देता था। इस संग्रहालय में इस तरह के बर्तनों के अवशेष है। इसी सभ्यता के जन सामान्य तथा सम्पन्न लोगों के लिए प्रयोग होने वाले बर्तन भी हैं। इन बर्तनों पर पालिश की जाती थी तथा काले रंग की पक्तियां खींची जाती थी।

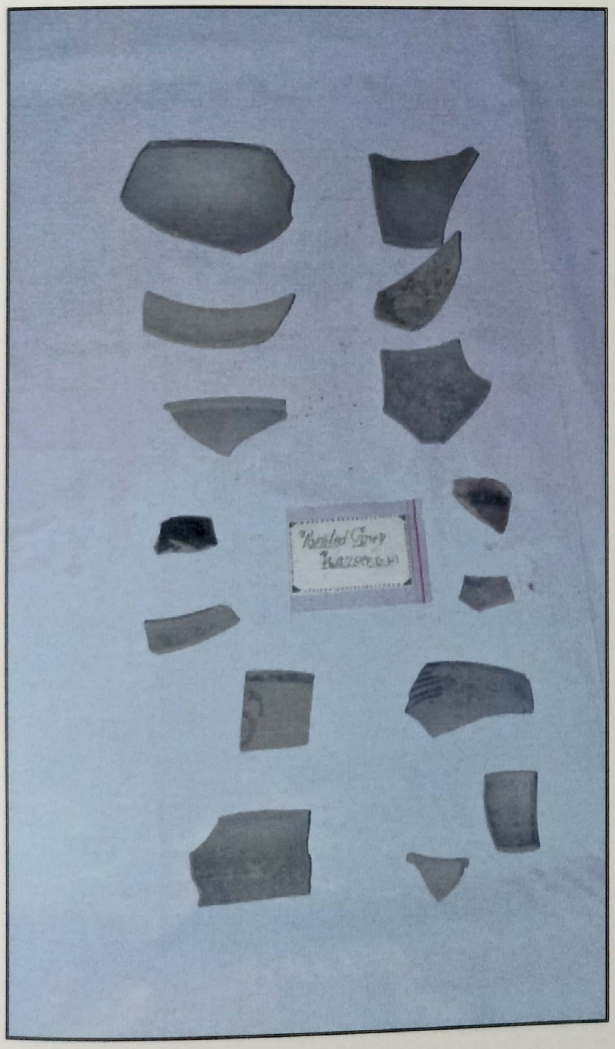

Scanned with Oken Scanner

मृद भाण्डों की श्रेणी में ही मौर्य काल, मौर्योत्तर काल, विशेषकर कनिष्क का काल, गुप्त काल, हर्षकाल, प्रारम्भिक मध्य काल, दिल्ली सल्तनत, मुगल काल तथा उतर मुगल काल की जानकारी वाले बर्तन है। जिनमें विभिन्न आकार के मटके, कटोरे, कटोरी तथा अन्य बर्तन है। अपनी निर्माण शैली, आकार व बनावट के आधार पर ये अपने युग की सही व्याख्या करते हैं तथा बदलते हुए क्रम को भी स्पष्ट करते हैं।

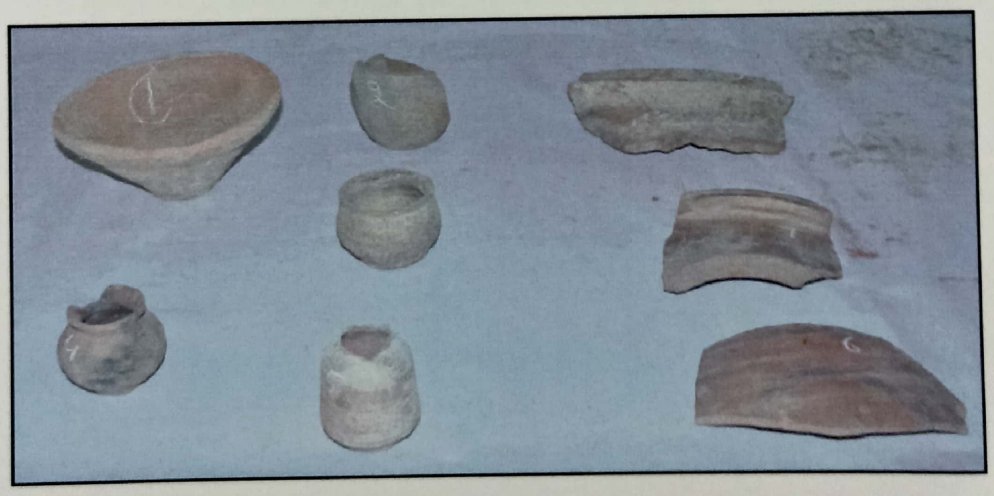

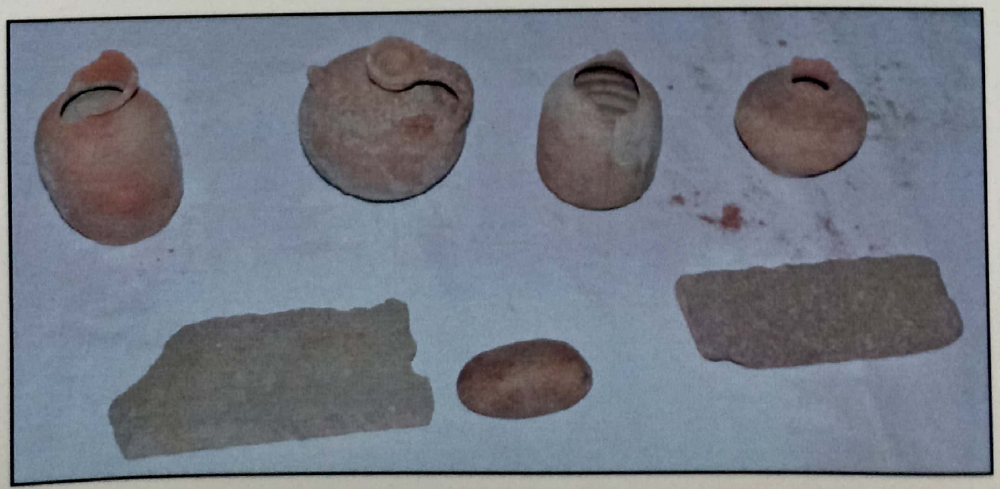

Scanned with Oken Scanner

Scanned with Oken Scanner

Scanned with Oken Scanner

(ख). ईंट

विभिन्न स्थलों की खुदाई के दौरान आवास व्यवस्था में ईंटे भी मिलती हैं। संग्रहालय में संरक्षित ईंटों में कुषाणकालीन, राजपूतकालीन, मुगलकालीन, ब्रिटिश काल की ईंटे हैं। ये ईंटें अपनी बनावट व आकार के कारण विशिष्ट हैं। इस कड़ी में ये तकनीक को भी अवगत कराती है। मुगल काल की दो ईंट विशेष हैं। इनमें एक कुएं की ईंट है जो एक और से कम चौड़ी तथा दूसरी और से अधिक है।

इसका लाभ यह है कि कुएं के अन्दर का व्यास बाहर की तुलना में कम होता है तथा उस युग के पूर्वज इस बात से परिचित थे कि ईंट को तोड़ना न पड़े तथा अन्दर व बाहर से निर्माण एक साथ पूरा होता रहे। इसी तरह नदी के पुल में प्रयोग होने वाली ईंट है जिसका एक किनारा गोल किया गया है। इसका लाभ यह था कि पानी जब बहाव में आए तथा पुल की भुर्ज से टकराए तो पानी का दबाव न बने बल्कि गोलाई के कारण आसानी से दिशा बदल ले। ये सभी ईंटे पक्की है तथा आकार भी भिन्न–भिन्न है।

Scanned with Oken Scanner

(ग). सिक्के

ऐतिहासिक दृष्टि से सिक्के काफी महत्वपूर्ण होते हैं। इनके माध्यम से किसी काल की आर्थिक स्थिति का ज्ञान होता है तथा यह भी जानकारी मिलती है कि सम्बन्धित लोगों का व्यापार कहां–कहां से होता था। सिक्के की बनावट को देखकर युग विशेष की टकसाल तथा विज्ञान व तकनीक की जानकारी मिलती है। संग्रहालय में भारतीय इतिहास से सम्बन्धित कई वंशों की जानकारी देने वाले सिक्के हैं।

कुषाणकालीन सिक्के पर कनिष्क को हवन करते हुए दिखाया गया है जबकि यौद्धेयों का सिक्का कुषाणों वाले सिक्के पर जोड़ लगाकर निर्मित किया गया है। राजपूतकाल के सिक्के पंचमार्क वाले हैं अर्थात उन पर कोई विशेष चिह्न नहीं है। सल्तनत काल में अलाऊद्दीन खलजी, मोहम्मद तुगलक व फिरोज तुगलक के सिक्के हैं। इसी तरह से मुगल काल में अकबर, जहांगीर, शाहजहां व औरंगजेब के सिक्के है। ये सभी सिक्के तांबे के हैं तथा विभिन्न आकारों में हैं। औपनिवेशिक काल के सिक्कों में ब्रिटिश काल की जानकारी व तकनीक के विकसित होने की जानकारी मिलती है। स्वतन्त्रता के बाद के सिक्के भी यहां है।

Scanned with Oken Scanner

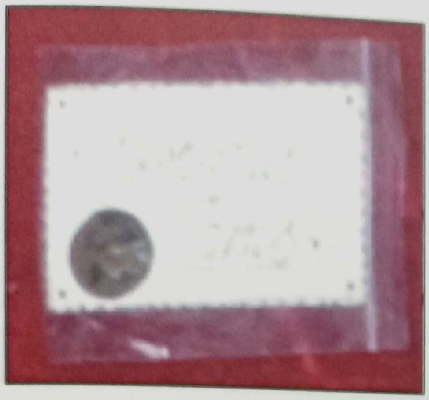

सुभाष चन्द्र बोस
द्वारा जारी सिक्का

इसी गैलरी में भारत के अतिरिक्त भिन्न देशों की मुद्रा भी है जो वर्तमान में प्रचलन में हैं। इनमें फ्रांस, जापान, नेपाल, सऊदी अरब, अमेरिका व इंडोनेशिया व पाकिस्तान की मुद्राएं है। ये मुद्राएं कागजी मुद्रा व सिक्के दोनों रूपों में हैं।

विश्व युद्ध सम्मान पदक

Scanned with Oken Scanner

(घ). मूर्तियाँ

मूर्तियों में प्राचीन भारत की विभिन्न शैलियों के दर्शाती प्रतिकृतियाँ है। इन प्रतिकृतियों में गांधार कला शैली, मथुरा कला शैली तथा द्रविड़ कला शैली अभिव्यक्त की गई है। ये सभी प्रतिकृतियां राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली के प्राप्त की गई है।

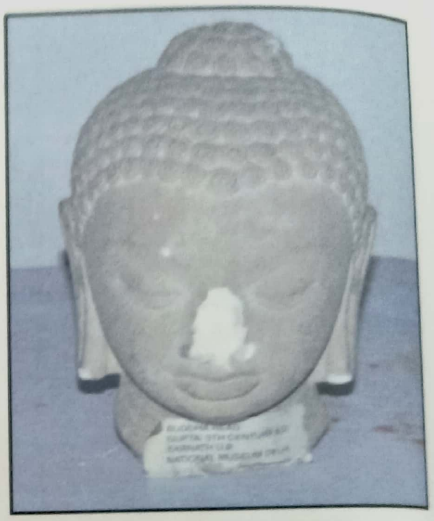

Scanned with Oken Scanner

मूर्तियों की कड़ी में एक काष्ट से बनी मूर्ति है, जो हरियाणा में पिजौंर के पास से खनन में प्राप्त हुई है। यह पूर्ण नहीं, बल्कि खंडित रूप में है। इसी तरह कुछ मिट्टी व पत्थर की मूर्तियां भी है। जो दिल्ली सल्तनत व मुगल काल में निर्मित है। इन मूर्तियों के माध्यम से पाठयक्रम के विभिन्न पक्षों को बच्चों के समक्ष रखने में काफी सुगमता मिलती हैं।

(ड़). अन्य पुरावशेष

संग्रहालय में कुछ अन्य पुरावशेष भी है, जो इतिहास के किसी एक काल, पर नहीं बल्कि विभिन्न युगों पर प्रकाश डालते हैं। इनमें से सर्वाधिक सामग्री हड़प्पा सभ्यता से सम्बन्धित है। इस सामग्री में मिट्टी की चूड़ियां, मनके, खिलौने, कूबड़ वाला बैल, फियाँस की चूड़ियां, चर्ट के ब्लैड, विभिन्न धातुओं के मनके, केश श्रृंगार का सामान, अस्थि का पिन तथा विभिन्न धातुओं से बनी हुई चीज़ें हैं।

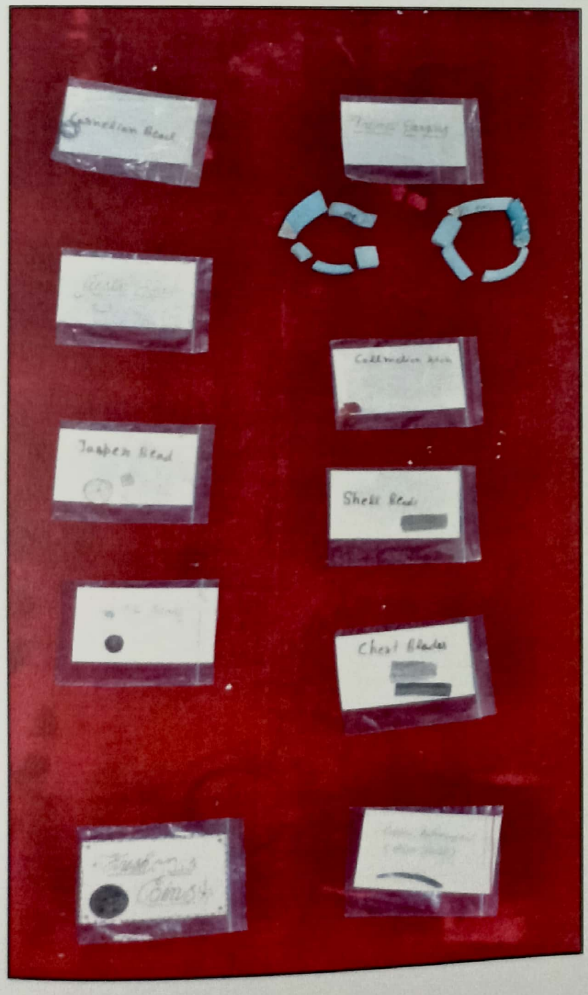

Scanned with Oken Scanner

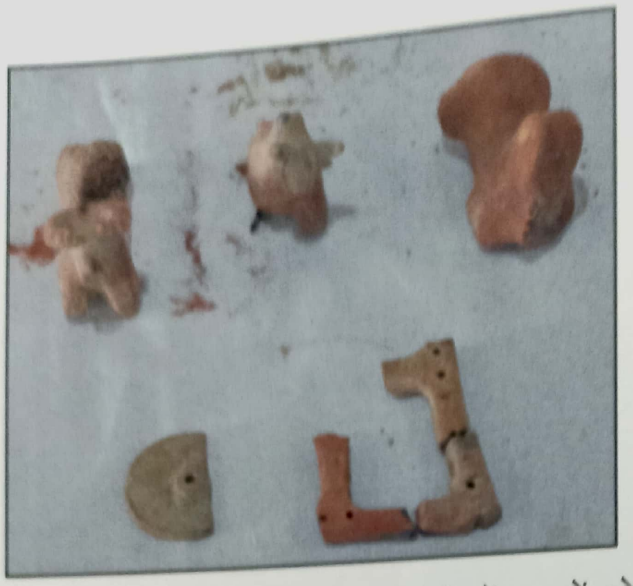

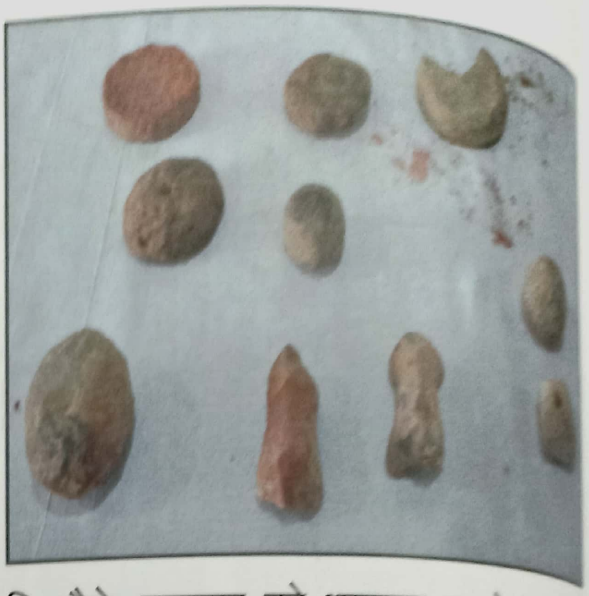

इसी तरह बाद के काल की चीजों में बच्चों के खिलौने, तलवार को धारदार बनाने का सि पत्थर, छत से पानी की निकासी मिट्टी का पितनाला, आभूषण व साज–सज्जा की चीजें हैं ये मौर्य काल तथा मौर्योत्तर काल से अधिक सम्बन्धित हैं। दैनिक प्रयोग में घरेलू उपयोग हो वाली चीजें भी लगभग इतिहास के काल खण्डों की पुष्टि करती है।

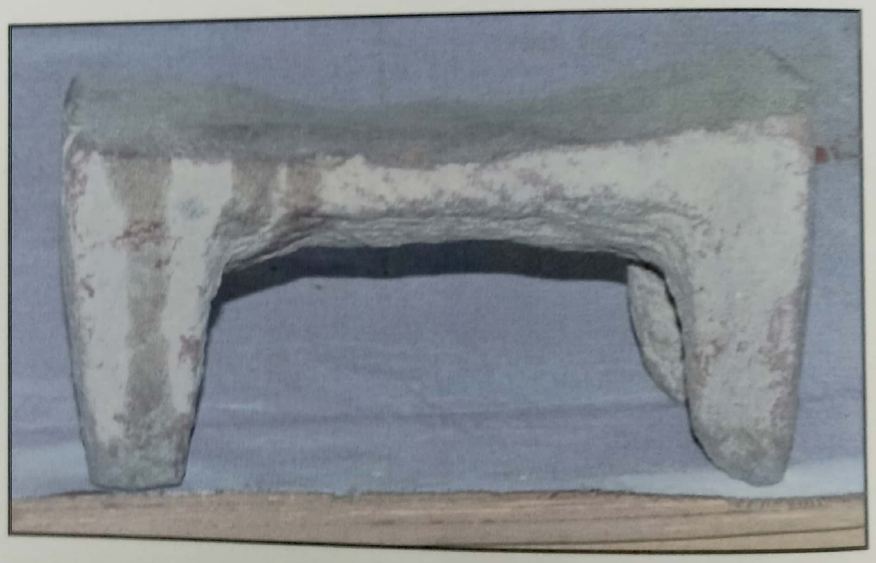

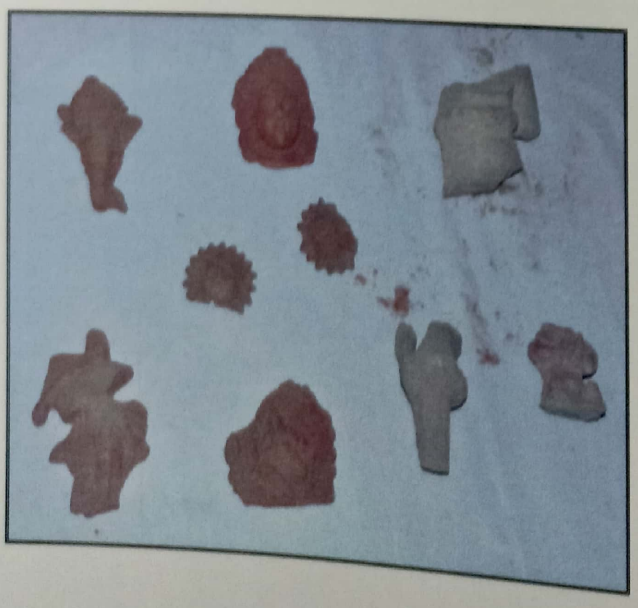

पुरातात्विक गैलरी में ही कुछ वैज्ञानिक उपकरण भी है जो ऐतिहासिक दृष्टि से अधिक पुराने नहीं हैं, लेकिन बदलती जीवन शैली के कारण ये या तो वर्तमान में प्रयोग नहीं हो रहे या फिर धीरे–धीरे लुप्त होते जा रहे हैं। इन उपकरण में समय नापने का पानी का कटोरा, सेवियां बनाने की लकड़ी की मशीन, बिना नम्बर वाला टेलिफोन तथा उंगली घुमाकर डायल करने वाला फोन, पुरानी तरह का अलार्म, टाईप मशीन, वस्तुओं को तोलने वाला तराजू, पुराने बाट, तेल इत्यादि को सुरक्षित रखने वाले चमड़े के बर्तन, चमड़े का रस्सा, कपास से रूई व बिनोला अलग करने वाली स्पीनिंग जैनी, चरखा व कताई–बुनाई का सामान है।

Scanned with Oken Scanner

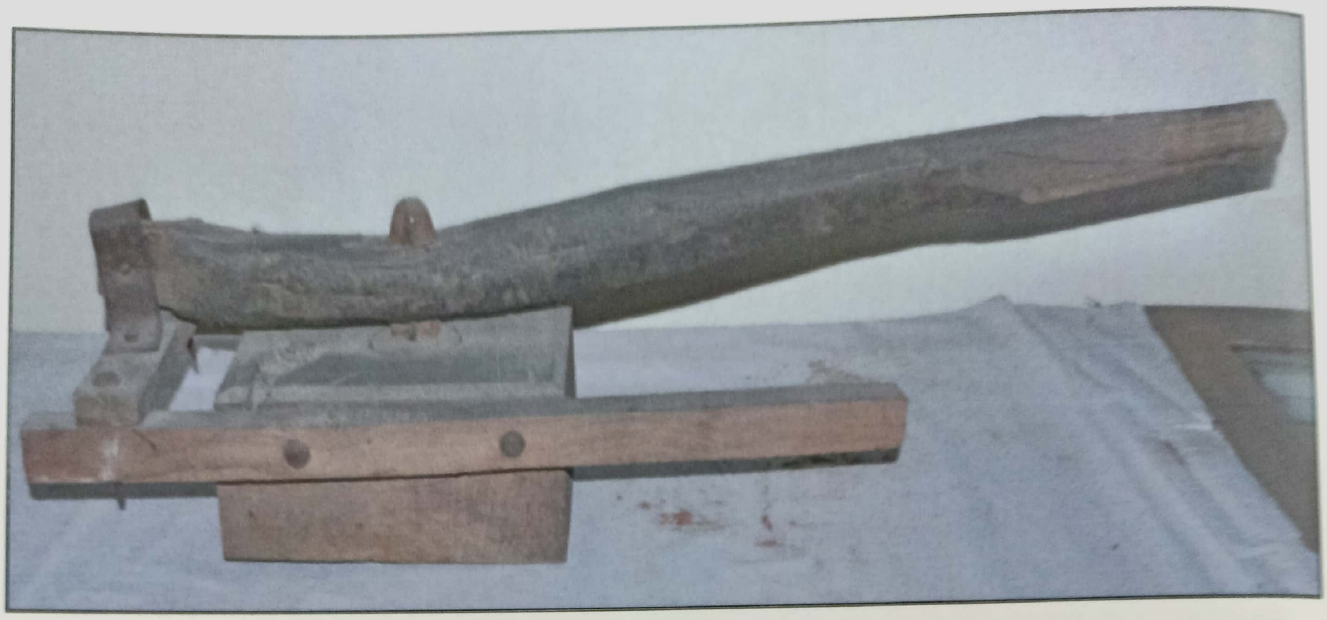

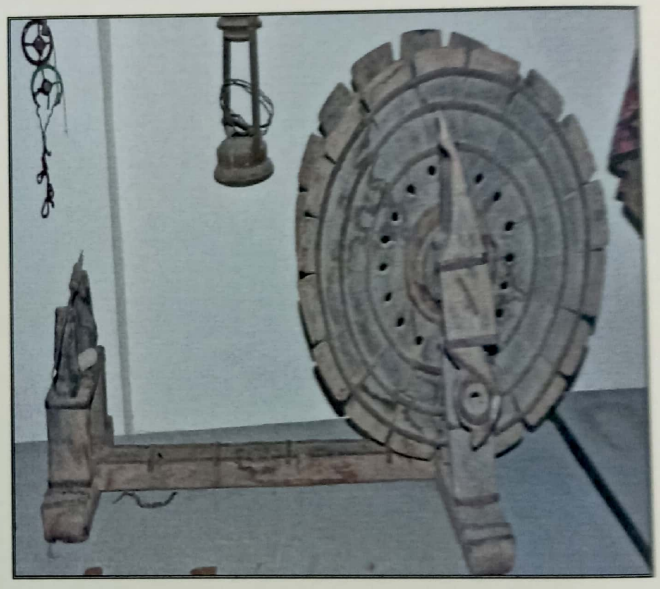

Scanned with Oken Scanner